बाइबल की महान शिक्षाएं

बाइबल में दी गई महान शिक्षाएं उन शिक्षाओं के अतिमानवीय स्रोत की ओर संकेत करती हैं।

परमेश्वर की शिक्षा

बाइबल परमेश्वर की व्याख्या करती हुई इस धर्मी और सर्वोच्च को महिमा देती है। स्थानीय कबायली या नगर के देवता के बजाय, बाइबल का परमेश्वर आकाश और पृथ्वी का सृष्टिकर्त्ता है। बाइबल का परमेश्वर, पीतल, लोहे, लकड़ी या पत्थर का होने के बजाय, ''जो न देखते न सुनते, न कुछ जानते हैं'' (दानिय्येल 5:23) सब कुछ जानने वाला आत्मा है। परमेश्वर ने अपने आपको कभी भी ईर्ष्या करने, बदला लेने वाले, कामुकता या किसी अन्य अनैतिकता में नहीं गिराया जैसा कि अन्यजातियों के देवताओं में आम तौर पर पाया जाता था। बल्कि, बाइबल का परमेश्वर दुष्टता से दूर है; ''वह सच्चा ईश्वर है, उसमें कुटिलता नहीं, वह धर्मी और सीधा है'' (व्यवस्थाविवरण 32:4)। परमेश्वर प्रेम का साकार रूप है। जब उसने किसी को दण्ड देना होता है, तो उसे इसका दुख होता है। वह सारी मनुष्यजाति का एक महान और दयालु पिता है जिसकी दिलचस्पी मनुष्य की भलाई में है।

हर युग में सब जातियों के लोग अपनी मर्जी से, देवताओं की उपासना करते रहे हैं। परन्तु उनके देवताओं को कभी भी उन गुणों से युक्त नहीं दिखाया जाता जो परमेश्वर में पाए जाते हैं। मनुष्य द्वारा बनाए गए देवताओं और बाइबल के परमेश्वर में अन्तर संकेत देता है कि ऐसा उत्तम परमेश्वर इन्सान के दिमाग की खोज नहीं है। स्पष्टत:, यदि बाइबल के लेखकों के पास परमेश्वर के बारे में कोई विचार था जो कि उनका अपना नहीं होता था, तो अवश्य ही उन्हें मनुष्य से ऊपरी शक्ति से सहायता मिली थी।

मनुष्य की शिक्षा

जिस प्रकार परमेश्वर के बारे में बाइबल की शिक्षा उसे जो सर्वोच्च व भला है, महिमा

देती है, वैसे ही मनुष्य के बारे में बाइबल की शिक्षा उसकी समस्त त्रुटियों के बावजूद उसे महिमा देती है। बाइबल द्वारा दिखाई गई मनुष्य के स्वभाव की तस्वीर न केवल सबसे बढ़िया है बल्कि सबसे सही भी है।

परमेश्वर के स्वरूप में, फिर भी पापी

बाइबल में मनुष्य को जानवरों से उच्च स्थान दिया गया है। उसे परमेश्वर का स्वरूप बताकर महिमा दी गई है; परन्तु स्वर्गदूतों से थोड़ा कम बताया गया है। परन्तु वही बाइबल मनुष्य को परमेश्वर की दृष्टि में एक टिड्डे की तरह छोटा और अत्यधिक पापी के रूप में दिखाती है। बाइबल के इस दोहरे दृष्टिकोण से मनुष्य अपने महत्व और दूषण दोनों को जान सकता है। इससे मनुष्य की हीन या अहंभावना को बढ़ने से रोका जा सकता है। बाइबल मनुष्य को दिखाती है कि उससे प्रेम किया जाता है और सराहा जाता है, जबकि साथ ही वह उसकी शुद्धता और पवित्रता में कमी भी दिखाती है। मनुष्य जाति का यह दोहरा पहलू यीशु की मृत्यु में विशेष रूप से स्पष्ट होता है: परमेश्वर के लिए बहुमूल्य परन्तु अगणनीय दोष वाले लोग ही क्रूसारोहण का कारण थे।

स्वतन्त्र नैतिक पसन्द

परमेश्वर मनुष्य को एक रोबोट के रूप में भी बना सकता था जो पूरी तरह से मशीन से चलने वाला और स्थिर होता, परन्तु वह चाहता था कि मनुष्य जिसे वह बनाए सही और गलत के विषय में, अर्थात शैतान की सेवा करने या परमेश्वर की सेवा करने की पसन्द का चुनाव करने के लिए पूर्ण रूप से स्वतन्त्र हो। नियतिवाद और भाग्यवाद के विपरीत, बाइबल मनुष्य को अपने आचरण के लिए उत्तरदायी बनाती है और उसे अपने भाग्य का फैसला लेने की अनुमति देती है।

मानवीय बराबरी

बाइबल के अनुसार, रंगभेद का कोई अस्तित्व नहीं है, परन्तु लोगों के एक गुट द्वारा अपने आपको सवर्ण होने का दावा करना आम बात है। अन्य कई जातियों की तरह यहूदी भी स्वर्ण जाति होने के भ्रम का शिकार बन गए थे। परमेश्वर ने संसार में मसीह को लाने के लिए यहूदियों को चुना, परन्तु उसका अभिप्राय यह नहीं था कि यहूदी अन्य जातियों से उत्तम हैं। इस सम्बन्ध में, परमेश्वर ने विशेष रूप से यहूदियों को चेतावनी दी थी कि स्वयं को दूसरों से अच्छे या उत्तम न समझें। परमेश्वर की चेतावनी के बावजूद भी, वे अपने आपको दूसरों से अच्छा समझते रहे।

इसी प्रकार यूनानी भी दूसरे लोगों को असभ्य मानते थे। रोमी लोगों का भी मानना था कि नीच लोगों को अपने अधीन करने से रोमी लोग उनके स्वामी बन जाएंगे। रोमी लोग, सभी गैर रोमियों को केवल शत्रु ही मानते थे जिन पर विजय पानी जरूरी थी।

इन्सान को लगता है कि रंगभेद के झगड़े से बचा नहीं जा सकता। दूसरी शताब्दी के

एक धूर्त व पढ़े-लिखे नास्तिक सैल्सस ने बहस की थी कि सभी जातियों के लिए एक धर्म की बात के कारण मसीहियत सफल होने की आशा नहीं रख सकती।

एडोल्फ हिटलर ने अपने अनुयायियों के मन में यह विचार डाला कि जर्मन लोग आर्य जाति के प्रतिनिधि बनकर संसार पर एक हज़ार वर्ष तक शासन करेंगे। 1940 के दशक में जापानी लोग भी यह मानते थे कि वे सारी मनुष्य जाति के लिए चढ़ता हुआ सूर्य हैं।

परन्तु, बाइबल परमेश्वर की मनुष्य जाति को एक बनाने की तस्वीर दिखाती है। यह सिखाती है कि यीशु सब लोगों के लिए मरा था। सच्चाई यह है कि ''परमेश्वर किसी का पक्ष नहीं करता'' (प्रेरितों 10:35) में इस बात के सही होने का चिह्न है। लोग विश्वव्यापी भाइचारे का अभ्यास नहीं करते, परन्तु बौद्धिक रूप से इसका खण्डन नहीं किया जा सकता है। यहूदियों ने अपने स्वभाव से यह शिक्षा नहीं बनाई थी, इसलिए कोई हैरान हो सकता है कि यदि बाइबल विशुद्ध रूप से मनुष्य द्वारा लिखी गई है तो इसमें यह विचार कहां से आया।

कर्त्तव्य की शिक्षा

मनुष्य के स्वभाव के बारे में बाइबल की शिक्षा किसी साधारण सोच को नहीं दिखाती है, अत: मनुष्य के लिए बाइबल की शिक्षा बहुत ही उच्च विचार दिखाती है। मनुष्य के सम्पूर्ण कर्त्तव्य को परमेश्वर और अपने पड़ोसी से प्रेम करने की दो महान आज्ञाओं में संक्षिप्त किया गया है। ये दो आज्ञाएं ही बाइबल की सभी आज्ञाओं का आधार हैं (मत्ती 22:36-40)।

परमेश्वर के लिए प्रेम

बाइबल के अनुसार, किसी का सबसे बड़ा प्रेम और सबसे बड़ी वफादारी, मनुष्य के सृष्टिकर्त्ता और स्वर्गीय पिता पर केन्द्रित होती है। परमेश्वर के लिए प्रेम को मित्रों से वफ़ादारी, अपने देश से वफ़ादारी और अपने परिवार से वफ़ादारी से अधिक महत्व दिया जाना चाहिए। किसी के कार्यों को क्या वांछनीय है, के बजाय परमेश्वर के सामने क्या सही है, के संदर्भ में देखना चाहिए। यह समर्पण के उस मापदण्ड को दिखाता है जिसका बाइबल पर विश्वास रखने वाले बहुत से लोग भी पालन नहीं करते हैं। परमेश्वर को दूसरे स्थान पसन्द नहीं हैं।

सारे मन से परमेश्वर को प्रेम करने वाला व्यक्ति दुष्ट सरकार की भी बात मानता है। वह सताव में आनन्दित होता है; वह हर परिस्थिति में संतुष्ट रहता है और धन्यवाद करता है। वह अपनी इच्छा से अपना इन्कार करके, अपनी सोच को शुद्ध करता है और अपने आपको सुधारने के लिए सज़ा देता है।

पड़ोसी से प्रेम

जैसे परमेश्वर से प्रेम करना आवश्यक है, वैसे ही अपने पड़ोसी से प्रेम न करने वाले के प्रेम को भी परमेश्वर अस्वीकार कर देता है। बाइबल में पड़ोसी से प्रेम को केवल बातों

से प्रेम करने से कहीं अधिक बताया गया है। इसे भूखे को भोजन, दुखी को आराम देने और ठुकराए हुए को सम्भालने के रूप में दिखाया जाता है। यह प्रेम अपने शत्रुओं से बदला लेने की इच्छा के बजाय उनके प्रति प्रेम दिखाने की मांग करता है। यह भलाई से बुराई पर विजय पाता है। पड़ोसी से प्रेम के लिए विनम्रता और अपनी आवश्यकताओं की अपेक्षा दूसरे की इच्छा को पहल देना आवश्यक है। अपने साथी के प्रति अच्छे आचरण का बाइबल का सिद्धांत इतना उत्तम है कि वास्तव में इसे बहुत कम लोग ही पूरा करते हैं।

नकली गुण बाहर किए जाते हैं

मनुष्य के लिए, बाइबल की शिक्षा विशेषकर नये नियम की शिक्षा, न केवल उसकी प्रशन्सा करती है जो अच्छा है, बल्कि विशेष रूप से उन गुणों को निकाल देती है जिनकी मूर्तिपूजक धर्मों में सराहना की जाती है। इनमें शारीरिक वीरता, देशभक्ति, और मित्रता को शामिल किया जाता है। शारीरिक वीरता के सम्बन्ध में, यीशु ने पतरस को यह समझाते हुए कि जो तलवार चलाते हैं वे तलवार से नाश किए जाएंगे, अपनी तलवार को म्यान में रखने की आज्ञा दी थी (मत्ती 26:52)। लाठी से भैंस नहीं मिल जाती, और बदला लेने से अच्छा भक्ति के लिए कष्ट सहना है। देश भक्ति के सम्बन्ध में, यद्यपि अपने देश से प्रेम करना आवश्यक है, परन्तु स्वर्ग के सिंहासन के प्रति वफ़ादारी उससे भी बड़ी बात है। मित्रता के सम्बन्ध में, जब मित्र परमेश्वर की सच्चाई में न चलते हों तो सच्चाई को ही पहल देनी चाहिए। हमें परमेश्वर और उसकी सच्चाई के प्रति इतना वचनबद्ध होना चाहिए कि, यदि आवश्यक हो, तो मित्रों से भी पराए हो सकें। ''मनुष्य के बैरी उस के घर ही के लोग होंगे'' (मत्ती 10:36)।

वीरता, देशभक्ति और मित्रता के गुणों की कहीं-कहीं ही लालसा की जानी चाहिए। परन्तु सबसे ऊंची आचार संहिता में, भी ये गुण सीमित हैं। लोग जब मानवीय गुणों को ऊंचा करते हैं, तो वे परमेश्वर को उसके सिंहासन से उतार देते हैं। ये तीन (या दूसरे) गुण सृष्टिकर्त्ता के प्रति सबसे अधिक वफ़ादारी के साथ उलझ जाएं, तो ये गुण न होकर अवगुण बन जाते हैं।

सारांश

मनुष्य ने परमेश्वर, मनुष्य के स्वभाव और मनुष्य के कर्त्तव्य से सम्बन्धित पवित्र शास्त्र में पाई जाने वाली महान शिक्षाएं बिना किसी सहायता के नहीं बनाई हैं। इसका पक्का प्रमाण है कि ईश्वरीय सहायता के बिना मनुष्य उन महान शिक्षाओं को नहीं बना सकता था। इसलिए, ये शिक्षाएं बाइबल के अति मानवीय मूल से होने का आन्तरिक प्रमाण हैं।

बाइबल की शिक्षाओं की सूक्ष्मदृष्टि और उच्च मापदण्डों का लोगों पर आज भी वही प्रभाव है जो यीशु के प्रवचनों का उसके समय था। नासरत के उसके पड़ोसी बुद्धि की उसकी बातों से पूरी तरह से हैरान थे। वे समझ नहीं पाते थे कि वह इतना बुद्धिमान और प्रबुद्ध कैसे है। हैरान होकर वे कहते थे, ''इसको ये बातें कहां से आ गईं? और यह कौन सा ज्ञान है जो

उस को दिया गया है ?'' (मरकुस 6:2)। वे जानते थे कि वह उनके ही गांव का एक लड़का है; वे उसके माता-पिता को, उसके भाइयों को और उसकी बहनों को भी जानते थे। व्यावहारिक रूप से वे उसके पूरे जीवन को जानते थे। वे जानते थे कि वह कभी स्कूल नहीं गया। यदि उसने अच्छी शिक्षा पाई भी हो, तो भी तीस वर्ष की अपनी आयु में वह अपने से दोगुने बड़े लोगों को गहन बुद्धि और ज्ञान की बातें बताता था। उनके पास अपने ही प्रश्न का उत्तर नहीं था।

इसी प्रकार, इस प्रश्न का उत्तर आज भी किसी अविश्वासी के पास नहीं है कि ''इसको ये बातें कहां से आ गईं ? और यह कौन सा ज्ञान है जो उस को दिया गया है ?'' यीशु के जन्म से आठ सदियां पहले भविष्यवाणी की बात को मानने वाला व्यक्ति ही यिशै के वंशज पर आत्मा ठहरेगा जिससे वह युक्ति और पराक्रम, बुद्धि और समझ पाएगा (यशायाह 11:2) समझ सकता है कि यीशु को ये ज्ञान की बातें कहां से मिलीं। वरना, उसकी बुद्धि का रहस्य आज भी उतना ही गहरा है जितना दो हज़ार वर्ष पहले था।

यीशु की व्यक्तिगत बातें किसी गैरमानवीय स्रोत की गवाही देती हैं। वास्तव में, पूरी बाइबल की शिक्षाएं ही, मनुष्य के लिए भला करने के अपने विलक्षण कारण से, ईश्वरीय स्रोत की ओर संकेत देती हैं। ''इसको ये बातें कहां से आ गईं ?'' इस प्रश्न का उत्तर उस व्यक्ति को नहीं मिल सकता जो बाइबल को मनुष्य की किताब समझता है। परन्तु, अपने तर्क को बाइबल की शिक्षाओं के प्रभाव की अगुआई देने की अनुमति देने वाले के पास इस प्रश्न का सीधा सा उत्तर है कि ये शिक्षाएं परमेश्वर की ओर से आई हैं।